# नालन्दा खुला विश्वविद्यालय

## नवम् दीक्षान्त समारोह

रविवार, 13 दिसम्बर, 2015

*के शुभावसर पर*

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति

श्री राम नाथ कोविन्द

का

अध्यक्षीय भाषण

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रास बिहारी प्रसाद सिंह जी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 नागेश्वर राव जी, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 आर0 पी0 उपाध्याय जी, इस विश्वविद्यालय के कुलसचिव (परीक्षा) डॉ0 एस0 पी0 सिन्हा जी, संयुक्त कुलसचिव श्री ए0 एन0 पांडेय जी, कार्यकारी परिषद एवं विद्या परिषद् के सदस्यगण, आमंत्रित अतिथिगण, शिक्षकगण, पदाधिकारीगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, आज के इस दीक्षांत समारोह में उपाधियाँ ग्रहण करने आए विद्यार्थी एवं उनके अभिभावकगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !

1. यह हर्ष का विषय है कि आज नालन्दा खुला विश्वविद्यालय द्वारा नवम् दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया है।

2. हमारे देश में 'दीक्षान्त समारोह' की बहुत पुरानी परम्परा रही है। प्राचीन शिक्षा केन्द्रों में, जिनमें नालन्दा विश्वविद्यालय का नाम अग्रणी था और इसी के नाम से प्रेरित होकर संभवतः नालन्दा खुला विश्वविद्यालय का नाम भी रखा गया है, सभी शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के साथ, उन्हें सजग एवं सुयोग्य नागरिक बनने की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त दीक्षान्त समारोह का भी आयोजन किया जाता था।

3. मुझे प्रसन्नता हो रही है कि नालन्दा खुला विश्वविद्यालय द्वारा इस परम्परा का अनुपालन लगभग प्रतिवर्ष किया जा रहा है। इसके लिए विश्वविद्यालय –परिवार बधाई का पात्र है ।

4. आज के दीक्षान्त समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा विगत् वर्ष में विभिन्न संकायों एवं पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत आयोजित परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र–छात्राओं को उपाधि–पत्र प्रदान किये गये हैं। उनमें से कतिपय छात्र–छात्राओं को, जिन्होंने अपने पाठ्यक्रमों की परीक्षा में सर्वाधिक अंकों

के साथ, प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता प्राप्त की है, 'स्वर्ण पदक' भी प्रदान किये गये हैं। इन सभी को मेरी हार्दिक बधाई।

5. प्रत्येक शिक्षार्थी के जीवन में दीक्षान्त समारोह में भाग लेना स्वयं एक सुखद अनुभूति है । मैं उन शिक्षार्थियों, जिन्होंने कुछ कम अंक प्राप्त किये हैं से कहना चाहूँगा कि किसी भी व्यक्ति को असफलता से घबराना नहीं चाहिए। वास्तव में, प्रत्येक असफलता एक अवसर प्रदान करती है और यदि सतत् परिश्रम, लगन एवं ईमानदारीपूर्वक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य किया जाए तो असफलता के बाद अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होती है। इसका एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का है जिन्होंने अनेक असफलताओं के उपरान्त अमरीकी राष्ट्रपति के निर्वाचन में विजय प्राप्त की। मात्र यही नहीं, उनके द्वारा गेटिसबर्ग में उद्घोषित 'लोकतंत्र' की परिभाषा सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र की आज भी कालजयी परिभाषा है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो यह इंगित करते हैं कि कई महान् विभूतियों ने अपने त्याग, अनवरत संघर्ष तथा परिश्रम के बल पर अपने क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलताएँ अर्जित कीं। केवल आवश्यकता इस बात की है कि आप अपने जीवन में असफलता से विचलित नहीं हों वरन् उसे एक सुअवसर बनावें।

प्रिय शिक्षार्थियों,

6. दीक्षान्त समारोह के उपरान्त जीवन के जिस क्षेत्र में आप प्रवेश करने वाले हैं, उस क्षेत्र में आपकी कर्त्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी, चिंतन शक्ति, अभिव्यक्ति की क्षमता, कुशल नेतृत्व की योग्यता एवं समाज के प्रति संवेदनशीलता

आदि मानकों के आधार पर ही समाज में आपका मूल्यांकन किया जायेगा। मेरी यह धारणा है कि विश्वविद्यालय ज्ञान का सर्वोच्च केन्द्र होता है।

व्यक्ति के सुसंस्कृत व्यक्तित्व के मानवीय मूल्यों का सघन अभ्यास करने का सुअवसर विश्वविद्यालय में ही छात्रगण को प्राप्त होता है। विश्वविद्यालय में शिक्षित व्यक्ति ही समाज के सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दे सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्रदायी कार्य में भी स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित व्यक्ति ही शिक्षा प्रदान करने में सक्षम होगा।

7. वर्तमान शताब्दी सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, जिसमें इन्टरनेट से ज्ञान का भंडार किसी भी शिक्षार्थी के पास उपलब्ध है। अतः आप सब अपने ज्ञान के भंडार को निर्बाध बढ़ाते रहें। इन्टरनेट से चन्द मिनट में ही सारी सूचनाएँ उपलब्ध हो जाती हैं, किन्तु सूचनाओं की तत्काल संप्रेषणीयता एक कठिन चुनौती भी है। आपको मैं एक परामर्श देना चाहूँगा। आप सभी को प्राप्त ज्ञान/सूचनाओं का परीक्षण करना चाहिए और उसके उपरान्त ही उनके धनात्मक पक्ष को, अपने सम्बन्धित कार्यक्षेत्र में इस प्रकार लागू करना चाहिए ताकि वह कार्य समाज को सर्व समावेशी बनाने में सहायक सिद्ध हो सके।

8. बिहार, डा० सच्चिदानन्द सिन्हा, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री मौलाना मजहरूल हक़, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, श्री जगजीवन राम, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' एवं फणीश्वर नाथ 'रेणु' इत्यादि अनेक महापुरुषों एवं साहित्यकारों की जन्मभूमि रही है। इस राज्य में हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों, जैनियों एवं सूफी पैगम्बरों के अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पवित्र

स्थल अवस्थित हैं। नालन्दा एवं विक्रमशिला के प्राचीन विश्वविद्यालयों ने धर्म, दर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। विश्व का प्रथम एवं प्राचीनतम गणराज्य भी इसी राज्य से विकसित हुआ। मेरी यह सदिच्छा है कि आप सभी इस विरासत को अक्षुण्ण रखने में अपना हर संभव प्रयास जारी रखेंगे तथा अपनी स्वतंत्र खोज, चिन्तन एवं बौद्धिक विकास के माध्यम से राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर ले जाने का भगीरथ प्रयत्न करेंगे।

9. परामपरागत शिक्षा प्रणाली के समान ही आज सम्पूर्ण विश्व में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली लोकप्रिय हो गयी है। अपने प्रतिवेदन में कुलपति जी ने नालन्दा खुला विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का जो विवरण प्रस्तुत किया है, वह सराहनीय है। नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के शिक्षार्थियों ने संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं में सफलताएँ प्राप्त की हैं। यह विश्वविद्यालय न केवल समाज में शिक्षा की मुख्य धारा से अभिवंचित वर्गों को ही शिक्षा का अवसर उपलब्ध करा रहा है वरन् उन शिक्षार्थियों को भी शिक्षा प्रदान कर रहा है, जो माध्यमिक स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त, पारम्परिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत प्रवेश नहीं लेकर किसी वृत्ति अथवा उपजीविका की प्राप्ति हेतु उच्च शिक्षा के एक शिक्षार्थी के रूप में ज्ञानार्जन के इच्छुक हैं। यह कहना प्रासंगिक होगा कि 1987 में स्थापित इस विश्वविद्यालय ने अभी तक उल्लेखनीय प्रगति की है एवं इसने गत् वर्ष में अपनी रजत जयन्ती का भी सफल आयोजन किया है।

10. मैं चाहूँगा कि भविष्य में यह विश्वविद्यालय और तीव्रगति से आगे बढ़े एवं राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अभियान के द्वारा वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करे।

यही नहीं, पारम्परिक पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त व्यवसायिक एवं कौशल–विकास से सम्बन्धित अधिकाधिक पाठ्यक्रमों का भी संचालन करे, ताकि देश के होनहार युवक–युवतियों को नियोजन एवं स्वरोजगार के अवसर सुगमता से उपलब्ध हो सकें। इस संदर्भ में कालजयी छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की कुछ पंक्तियों को मैं उद्धृत करना चाहूँगा :–

**"इस पथ का उद्देश्य नहीं है,**

**श्रांत भवन में टिक रहना;**

**किन्तु पहुँचना उस सीमा तक;**

**जिसके आगे राह नहीं....."**

11. इस विश्वविद्यालय द्वारा अपने सभी पाठ्यक्रमों का संचालन, सी०सी०टी०वी० के अन्तर्गत परीक्षाओं का आयोजन, परीक्षाफल का प्रकाशन एवं तदुपरान्त् दीक्षान्त समारोह का आयोजन ससमय किया जाता है, यह पर्याप्त संतोषदायी है।

इसके लिए मैं नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति एवं विश्वविद्यालय के अन्य सभी कर्मियों को साधुवाद देता हूँ।

आप सभी के लिए आगामी नववर्ष मंगलमय हो !

**जय हिन्द !**

vk/vi
दूरभाष संख्या : 2201013
फैक्स : 2201001
ई.मेल : nalopuni@sancharnet.in

# नालन्दा खुला विश्वविद्यालय

तृतीय तल, बिस्कोमान भवन, गाँधी मैदान, पटना-800001

13.12.2015

## नवाँ दीक्षान्त समारोह
## कुलपति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन

बिहार राज्य के माननीय महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति, श्री राम नाथ कोबिन्द जी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 (डॉ0) नागेश्वर राव जी, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, डॉ0 राम प्रकाश उपाध्याय जी, महामहिम के प्रधान सचिव श्री ब्रिजेश मेहरोत्रा जी, कार्यकारी परिषद्, विद्यापरिषद् एवं वित्त समिति के सभी उपस्थित सम्माननीय सदस्यगण, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के सभी उपस्थित पूर्व कुलपति महोदय, माननीय निदेशक, उच्च शिक्षा तथा शिक्षा विभाग के अन्य पदाधिकारीगण, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपति, प्रतिकुलपति एवं कुलसचिव महोदय, विभिन्न विद्यापीठों के माननीय समन्वयक एवं शिक्षकगण, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय में स्वर्णपदक दाता परिवार के उपस्थित प्रतिनिधिगण, आमंत्रित माननीय अतिथिगण, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलसचिव (परीक्षा), संयुक्त कुलसचिव, सभी सतत् कार्यशील विश्वविद्यालय के कर्मी, उपाधि प्राप्त करने वाले प्रिय विद्यार्थियों, मिडिया बन्धुओं, बहनों एवं भाईयों,

2. आज का दीक्षान्त समारोह, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय का 9वाँ दीक्षान्त समारोह है । इसमें वर्ष 2014 की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों (इन्टरमिडियेट तथा सर्टिफिकेट के कोर्स को छोड़कर) को उपाधि प्रदान की जायेगी । इस परीक्षा में कुल 19,712 विद्यार्थियों ने भाग लिया था, जिसमें 10,917 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए । इन उत्तीर्ण विद्यार्थियों में करीब 1,102 विद्यार्थी आज उपस्थित हैं, जो स्वयं प्रत्यक्षतः इस यादगार अवसर पर उपाधि प्राप्त करेंगे । वे उत्तीर्ण विद्यार्थी जो किन्हीं कारणों से आज उपस्थित नहीं हो सके, उन्हें भी आज की मान्य तिथि से हीं उपाधि दी जायेगी ।
नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के लिए हर्ष का विषय है कि आज के दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता, माननीय राज्यपाल सह कुलाधिपति महोदय स्वयं कर रहे हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनके आशीर्वचनों से उपाधि ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को अपने जीवन में नई ताजगी एवं दिशा प्राप्त हो सकेगी ।

3. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय अपने जीवन का 28 बसंत पूर्ण कर चुका है । वर्तमान समय में 119 पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं, इनमें अनेक पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी, व्यवसायिक और कौशल वृद्धि से सम्बन्धित हैं । आज विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की कुल संख्या लगभग 1.5 लाख है ।

vk/vi
दूरभाष संख्या : 2201013
फैक्स : 2201001
ई.मेल : nalopuni@sancharnet.in



विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम 10 विद्यापीठों के अन्तर्गत चलाये जाते हैं । विश्वविद्यालय द्वारा इसी सत्र में अंग्रेजी में एम0ए0 की पढ़ाई तथा इन्फॉरमेशन एवं पब्लिक रिलेशन्स तथा हिन्दी-इंगलिश ट्रांसलेशन में पीजी डिप्लोमा और बी0ए0/बी0एस0सी0 स्तर पर सांख्यिकी विषय की पढ़ाई प्रारंभ की गई है ।

4. अगले सत्र, अर्थात् 2016 ई0 से कई नए पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की योजना है । इनमें आपदा प्रबंधन तथा गृह विज्ञान में एम0ए0/एम0एसी0 तथा इलेक्ट्रॉनिक्स में बी0एसी0 की पढ़ाई प्रारंभ करने की योजना है । मानव संसाधन प्रबंध में पीजी डिप्लोमा की पढ़ाई भी प्रारंभ की जायेगी । कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हमारी प्रतिबद्धता है । इसका प्रमाण है कि नालन्दा खुला विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त छात्र-छात्राऐं बड़ी संख्या में केन्द्रीय तथा राज्य सरकार के प्रशासनिक सेवा में सफलता प्राप्त कर सके हैं । हमारे विद्यार्थी बैंकिंग सेवा, सूचना तकनिकी तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना परचम लहरा रहे हैं । हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जिला और अनुमंडल स्तर पर अध्ययन केन्द्रों की स्थापना करने के लिए कटिबद्ध हैं । इनमें से अधिकतर केन्द्रों पर नामांकन के साथ काउन्सेलिंग वर्ग का भी आयोजन किया जाता है। कदाचार रहित परीक्षा भी हमारी प्रतिबद्धता है । यही कारण है कि हमारे परीक्षा केन्द्र सिर्फ उन्हीं अध्ययन केन्द्रों पर संभव हैं, जहाँ सीसीटीवी की सुविधा परीक्षा भवनों में उपलब्ध हैं । नालन्दा खुला विश्वविद्यालय स्वयं अपने प्रांगण में प्रतिदिन 3000 विद्यार्थियों की परीक्षा लेता है । समय पर नामांकन, परीक्षा एवं परीक्षाफल हमारे पदाधिकारी, समन्वयक और कर्मचारियों के कार्यशैली का मूलमंत्र है । यही हमारी अलग पहचान भी है ।

5. बिहार में महिलाओं की साक्षरता और शिक्षा की स्थिति अच्छी न होने के कारण 2007 ई0 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के अवसर पर विश्वविद्यालय ने अपना ध्यान खींचा और उसी समय यह निर्णय लिया गया कि महिलाओं को कुल फीस में 25 प्रतिशत की छूट दी जायेगी, जो आज भी यथावत् है । महिलाओं को नामांकन में छूट के परिणाम स्वरूप आज छात्राओं की संख्या लगभग छात्रों के बराबर है । इतना ही नहीं, आज स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले कुल 28 विद्यार्थियों में से 18 छात्राएँ भी होंगी । इसी प्रकार कुल उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में छात्राओं का अनुपात 60 प्रतिशत है । मैं समझता हूँ कि बिहार में महिला सशक्तिकरण के लिए इस विश्वविद्यालय के प्रयास को सबों के द्वारा सराहा जायेगा ।

6. हम यह भी बताना चाहते हैं कि नालन्दा खुला विश्वविद्यालय संभवतः भारत में एकमात्र विश्वविद्यालय है, जहाँ 22 कैरेट सोने का निर्मित गोल्ड

vk/vi
दूरभाष संख्या : 2201013
फैक्स : 2201001
ई.मेल : nalopuni@sancharnet.in



मेडल, सर्टिफिकेशन स्लिप के साथ प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को दिया जाता है ।

7. हमारे विश्वविद्यालय द्वारा शोध एवं प्रकाशन के कार्य को भी गतिमान बनाया गया है । 2015 ई0 में 20 विद्यार्थियों ने नालन्दा खुला विश्वविद्यालय से पी-एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की है, जिन्हें 10वें दीक्षान्त समारोह में उपाधि प्रदान की जायेगी । विश्वविद्यालय द्वारा एक शोध प्रकाशन कमिटि का भी गठन किया गया है, इस कमिटि की अनुशंसा के आधार पर हम वैसे पुस्तकों को प्रकाशित करते हैं, जो अनुसंधान आधारित हैं तथा देश और समाज को नई दिशा दे सकता है । अभीतक कुल 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । विश्वविद्यालय द्वारा नैनो टेक्नोलॉजी, बुद्ध सर्किट तथा हिस्ट्री ऑफ पटना पर शोध हेतु विशेष राशि आवंटित किए गए हैं । इसी वर्ष बिहार के जनजातियों की विरासत और परम्परागत सांस्कृतिक अध्ययन हेतु शोध राशि स्वीकृत की गई है । विश्वविद्यालय शीघ्र ही एक दिन का एक कार्यशाला करने जा रहा है, जिसमें विलुप्त हो रहे कैथी लिपि के संरक्षण के उपायों पर विचार किया जायेगा ।

8. विश्वविद्यालय को गतिमान बनाये रखना हमारी मौलिक जिम्मेवारी है। इसी अवधारणा के अन्तर्गत प्रायः सभी विषयों के पाठ्यक्रम को समुन्नत करने हेतु विशेषज्ञों की कमिटि का भी गठन किया गया है । उनकी अनुशंसा के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री (एसएलएम) में आवश्यक परिवर्तन भी किये जा रहे हैं । 2016 के सत्र में पी-एच0डी0 कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों का नामांकन यू0जी0सी0 के 2009 के गाईड लाईन के अन्तर्गत होगा और सभी विद्यार्थियों के लिए मैथेडोलॉजी कोर्स करना अनिवार्य होगा ।

9. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के प्रतीक चिह्न में लिखे गए मंत्र "पावका नः सरस्वती" ऋग्वेद से लिया गया है, जिसका मूल अभिमंत्र है कि सभी विद्या की अधिष्ठात्री हमें ज्ञान एवं विद्या से भर दें । वस्तुतः विचार ही सभी कर्मों के बीज हैं । अतः माँ सरस्वती हमें सिर्फ अच्छे और शुद्ध बीज ही बोने का ज्ञान दें जिससे श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा और हम बुद्ध की पवित्र धरती से पुनः सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया तथा जीयो और जीने दो का मंत्र विश्व के कोने-कोने में फैला सकें ।

10. आइये आज के 9वें दीक्षान्त समारोह में हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हमारे विद्यार्थी ज्ञान और विद्या से परिपूर्ण हों, यशस्वी हों, धनवान हों,

VK/VI
दूरभाष संख्या : 2201013
फैक्स : 2201001
ई.मेल : nalopuni@sancharnet.in

# नालन्दा खुला विश्वविद्यालय

तृतीय तल, बिस्कोमान भवन, गाँधी मैदान, पटना-800001

चरित्रवान हों और दुनियाँ के जिस किसी कोने में जाएँ अपने आचरण और कर्म से नालन्दा खुला विश्वविद्यालय का नाम रौशन करें ।

11. अब मैं अपने विशिष्ट अतिथिगण, आमंत्रित मेहमान और प्यारे विद्यार्थियों को आने वाले नव वर्ष की शुभकामना देते हुए उपाधि पत्र अधिकरण कार्यक्रम को आगे बढ़ाना चाहता हूँ । इसी के साथ मैं माननीय महामहिम राज्यपाल और प्रो0 राव के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद हमारे 9वें दीक्षान्त समारोह में शिरकत करने की कृपा की है । आपके आशीर्वचनों से हमारे विद्यार्थी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे । उपाधि ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को मैं विनम्र सलाह देता हूँ कि वे कार्यक्रम के अन्त तक अपने जगह पर शान्तिपूर्ण बैठे रहें । इससे आपकी ही प्रशंसा होगी। अंत में एक बार पुनः सभी को शुभकामनाएँ ।

धन्यवाद !

ꕥ ꕥ ꕥ

# नालन्दा खुला विश्वविद्यालय

## नवम् दीक्षान्त समारोह

रविवार, 13 दिसम्बर, 2015

*के शुभावसर पर*

सम्मानित अतिथि

प्रो० (डा०) नागेश्वर राव

कुलपति

इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

का दीक्षान्त अभिभाषण

1. नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं बिहार के राज्यपाल महामहिम श्री राम नाथ कोविन्द जी, बिहार के माननीय शिक्षामंत्री डा० अशोक चौधरी जी, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० (डा०) रास बिहारी प्रसाद सिंह जी, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों के सम्मानित सदस्यगण, आचार्यगण, अतिथिगण एवं विद्यार्थियों ।

2. मेरे लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि इस विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति सह–महामहिम राज्यपाल महोदय, जो स्वयं एक लब्ध प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक एवं कानूनवेत्ता रहे हैं, आज इस दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता कर रहे हैं । राष्ट्रीय राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । वे भारत की गौरवशाली परम्परा के प्रतीक हैं । अतः मैं उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

3. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में कार्य करने की वजह से मुझे देश के लगभग सभी मुक्त विश्वविद्यालयों की प्रगति से अवगत होने का प्रत्यक्ष अवसर मिलता रहा है । अतः मैं आधिकारिक रूप से कह सकता हूँ कि नालन्दा खुला विश्वविद्यालय ने विगत् कुछ वर्षों में अभूतपूर्व प्रगति की है । सम्प्रति, इस विश्वविद्यालय द्वारा 119 से अधिक पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं । स्वाधिगम सामग्रियों के निर्माण में इस विश्वविद्यालय ने पर्याप्त उत्कृष्टता प्राप्त कर ली है । विश्वविद्यालय द्वारा ससमय नामांकन, परीक्षा का संचालन एवं

परीक्षाफलों का ससमय प्रकाशित किया जाना अति प्रशंसनीय है । फलस्वरूप, विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है । वृत्तिका सम्बन्धी पाठ्यक्रमों, विशेषकर जनसंचार तथा पुस्तकालय विज्ञान आदि, में कम्प्यूटर ट्रेनिंग को अनिवार्य बनाकर एवं महिला–विद्यार्थियों को कोर्स–फीस में 25% की छूट देकर, इस विश्वविद्यालय ने अन्य विद्या–संस्थानों के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है । वर्ष 2015–2016 से विश्वविद्यालय द्वारा यू०जी०सी० के नये गाइडलाइन्स के आधार पर 15 विषयों में पीएच०डी० पाठ्यक्रम की भी शुभारम्भ करने की योजना है । ये सारे प्रयत्न, निःसन्देह, अत्यन्त सराहनीय हैं । मैं इसके लिए विश्वविद्यालय प्रबन्धन को धन्यवाद देता हूँ तथा भविष्य में इस विश्वविद्यालय की चतुर्दिक प्रगति एवं सतत् विकास के लिए अपनी शुभकामना देता हूँ ।

4. यह कहना ससामयिक एवं प्रासंगिक होगा कि पिछले कई वर्षों के प्रयास के बाद अब सम्पूर्ण विश्व में दूरस्थ शिक्षा का प्रभाव दिखाई देने लगा है । माध्यमिक शिक्षा से उच्च एवं तकनीकी शिक्षा तक अपना विस्तार कर दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था ने अपने आपको सर्वसमावेशी बना दिया है । प्रारम्भ में इसे केवल एक 'शिक्षा प्रदायी' माध्यम जाना जाता था जिसके द्वारा उनलोगों को शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी थी जो किन्हीं कारणोंवश उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो गये थे, किन्तु अब यह विधा शिक्षा प्रदायी का माध्यम न रहकर, परम्परागत

विश्वविद्यालयों का पूरक हो गया है । आज अपने देश में उच्च शैक्षणिक संस्थानों में प्रविष्ट प्राप्त प्रत्येक पाँच विद्यार्थियों में से एक विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहा है और अब इस माध्यम से न केवल वैसे लोग पढ़ रहे हैं जो शिक्षा से वंचित रह गये थे, वरन् ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो अपना ज्ञान विकसित एवं योग्यता बढ़ाने के लिये इन पाठ्यक्रमों में अपना नामांकन कराते हैं । शिक्षा के क्षेत्र में आज प्रतिदिन कुछ न कुछ नयापन आ रहा है । ज्ञान के नये क्षेत्र विकसित हो रहे हैं, परन्तु इस नयेपन को प्रत्येक शिक्षा–आग्रही व्यक्ति तक पहुँचाना पारम्परिक शिक्षा के लिये अकेले सम्भव नहीं है । अतः विभिन्न अध्यवसायों इत्यादि में संलग्न व्यक्तियों के लिये दूरस्थ शिक्षा ही मात्र एक ऐसा विकल्प है जिसके माध्यम से वे नये ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं ।

5. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से लेकर आज तक इस देश में, शिक्षा के प्रसार से सम्बन्धित मात्रात्मक समस्याएँ एवं शिक्षा की अर्न्तवस्तु से सम्बन्धित गुणात्मक समस्याएँ बनी रही हैं । मात्रात्मक समस्याएँ, तो कुछ हद तक हल कर ली गई हैं, किन्तु गुणात्मकता समस्याएँ अभी भी ज्यों की त्यों बनी हुई हैं । मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् आदि अखिल भारतीय संस्थाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक विकास के लिए अनेक सार्थक प्रयत्न किए हैं । इसमें कोई संदेह नहीं है कि

पारम्परिक शिक्षा पद्धति में नूतन तकनीकों के प्रयोग तथा दूरस्थ शिक्षा में सेटलाइट शिक्षा तथा ऑनलाइन एजुकेशन के प्रयोग ने शिक्षण क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है तथा शिक्षा को समावेशी बनाने में महत्त्वूपर्ण भूमिका अदा की है । अब आवश्यकता इस बात की है कि दूरस्थ विश्वविद्यालयों को भी सूचना एवं संचार टेक्नोलॉजी के माध्यम से जोड़ा जाय ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो सकें ।

6. दूरस्थ शिक्षा एवं सम्मुख शिक्षा में तालमेल कैसे बैठाया जाए, यह भी एक महत्त्वपूर्ण समस्या है । इसपर विशेष ध्यान देने की जरूरत है । आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने सभी मुक्त विश्वविद्यालयों के लिये एक विश्वविद्यालय कन्सोरटियम (Inter University Consortium) का गठन किया था। इसमें सभी राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालय शामिल हैं । इस अन्तर विश्वविद्यालय कन्सोरटियम द्वारा विभिन्न तकनीकों के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकास का कार्य किया जा रहा है, जिसमें सूचना एवं संचार टेक्नोलॉजी की प्रमुख भूमिका है । इस कन्सोरटियम द्वारा सभी कार्यक्रमों के लिए गुणवत्तायुक्त स्वाधिगम सामग्रियों का विकास एवं मूल्यांकन के तरीकों, सतत् देख–रेख एवं निरीक्षण इत्यादि कार्यों पर विचार किया जा रहा है ।

7. आप सबों को मालूम है कि भारत में प्रतिभा की कमी नहीं है । आवश्यकता है, प्रतिभा को निखारने की । दूरस्थ शिक्षा पद्धति की इस दिशा में विशेष भूमिका है ।

प्रिय विद्यार्थियों,

आज इस दीक्षान्त समारोह के उपरान्त, आप एक नये जीवन में प्रवेश करेंगे । यदि आप कहीं कार्यरत होंगे तब भी आपको एक नयापन का अहसास होगा । अतः इस अवसर पर मैं आप सबों से मात्र एक ही अपेक्षा रखूँगा और वह यह कि आप जहाँ कहीं हों, इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि आपके कार्य एवं आचरण से समाज के अन्तिम व्यक्ति को लाभ अवश्य पहुँचे । आप अपने दृष्टिकोण एवं व्यवहार में लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मर्यादाओं का सर्वदा अनुसरण करें जिससे कि यह प्रमाणित हो कि आप स्नातकधारी हैं । ज्ञान प्राप्ति के लिए अहर्निश प्रयन्तशील रहें । इस संक्रमण युग में इन्टरनेट के माध्यम से असीमित ज्ञान–भंडार आपके पास उपलब्ध है । संशय की स्थिति में आप उसका उपयोग अवश्य करें । मैं पुनः आप सबों को बधाई देता हूँ एवं अपनी शुभकामना देता हूँ कि आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करें एवं अपने जीवन–पथ के विभिन्न आयामों में आकाश की ऊँचाइयों को छूएँ ।

नव वर्ष की शुभकामनाएँ !